भूमंडलोकरण और समकालीन हिंदी उपन्यास–''दौड'' उपन्यास के संदर्भ में

अशोक बाळू पाटील
शोधछात्र
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

भूमंडलीकरण के नाम पर भूमंडलीकरण में बदलती जा रही दुनिया में अब संचार साधनो के विविध आयामों ने जन्म लिया है। वैश्विकरन का माहोल, व्यवसाय में बढती स्पर्धा सफलता प्राप्ती आदि की दृष्टि से फेसबुक, इंटरनेट, मेल, व्हॉट्सॲप, विज्ञापन के साथ–साथ तकनिकी, प्रौद्योगिकी के कारण मनुष्य यंत्रमानव बनता जा रहा है। भूमंडलीकरण सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनोंका समुच्चय है याने यह हमारे भीतर और बाहर जीवन के दोनो पक्षों को प्रभावित करता है। आज भी कर रहा है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नही रह सकता। वह भी समकालीन हिंदी उपन्यास जो जीवन का सर्वांगीण यथार्थ चित्रण करता है। समकालीन कई उपन्यास कारोंने भूमंडलीकरण संदर्भ में उपन्यास लिखे, उनमें से एक है ममता कालीया। इनके दौड उपन्यास में भूमंडलीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रण किया है।

भूमंडलीकरण संकल्पना –

भूमंडलीकरण की संकल्पना/स्वरूप बहुतही व्यापक है। इस शब्द के अर्थ को एक साथ बाँधना कसरत की बात है। भूमंडलीकरण याने यांत्रिकीकरण का मानवी जीवनपर हुआ परिणाम या सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तनो का सम्मुच्चय; जो मानव के भीतरी और बाहरी जीवन को प्रभावित करता है। उदा. आज रोटी की जगह पिजा ने ली है। चुल्हा की जगह गैसने, चिट्ठी/पत्राचार की जगह मोबाइल ई–मेल ने, दुपट्टे की जगह जीन्ज और टॉप ने इस तरह का बदल।

समकालीन अर्थ –

किसी भी शब्द के अर्थ को एक कटघरे में बांध देना आज के युग मे न्यायोचित नही होगा। समकालीन का समही अर्थ हे अपने समय का इसके पर्याय समसामायिक युगीन, अद्यतन आदि नाम भी प्रचलीत हैं। विद्वानो, आचार्य एवं रचनाकारोंने समकालीन के भिन्न अर्थ प्रकट किये है। समकालीन शब्द का कोशगत अर्थ है – ''एकही, अभिन्न, सदृश पक्षपात रहित निपक्ष, सच्चा, साधु, सब, समग्र आदि''[१]

दौड उपन्यास में चित्रित भूमंडलीकरण –

सन २००० मे प्रकाशित ममताजी का यह छठॉ उपन्यास है। यह उपन्यास आधुनिक कालकी आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद के जीवनमत पुण्यों को स्पष्ट करता है। भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप आर्थिक उदारीकरण ने नवयुवकों के लिए करिअर के नए द्वार तो खोल दिए है। किन्तु उन्हे अपनी जडसे कटने के लिए विवश किया है। बहुराष्ट्रीय कंपनीयों में उच्चस्तरीय नौकरी पाकर पैसे के पिछे दौडना। माता–पिता, भाई, पत्नी परिजन को भूलकर संस्कृति को भूलकर भौतिकवादी जीवन जीनेवाले नवयुवकों को चित्रित किया है।

१. भारतीय संस्कृति का एथिक्स–

दौड उपन्यास का नायक पवन भूमंडलीकरण और औद्योगिक समाज में नये ढंग की नौकरी करनेवाले युवा वर्ग का प्रतिक है। वह प्रोफेशनल एथिक्स को ज्यादा महत्त्व देता है। जब वह विवाह करता हैतबवह नौकरी छोडकर चन्नई कंपनी में

जाइन होने की बात करता है। तब पिताजी उसका विरोध करते है। पीताजी कहते है कि ''जी. जी. सी. एल. ने तुम्हे इतने वर्षो में काम सिखाकर काबिल बनाया है। कल तक तुम इसके गुण गाते नही थकते थे तुम्हारी एथिक्स को क्या होता जा रहा है।''[२] तब पवन चिडकर कहता है ''मेरे हर काम में आप यह क्या एथिक्स, मौरॅलिटी जैसे भारी भरकम पत्थर मारते रहते है। मै जिस दुनिया में हूँ वहाँ एथिक्स नही प्रोफेशनल एथिक्स की जरूरत है। चीजों को नई नजर से देखना सिखिए नही तो आप पुराने मखबार की तरह रद्दी की टोकरी में फेंक दिएँगे''[३] इस वार्तालाप से हमे दोनों पिढीयों में अंतर कब क्युँ और कैसे पड जाता है इसबात का अंदाजा हो जाता है। हम बच्चों को बचपन से तरक्की की बात बता देते है। जबवह आगे निकलने लगते है तो उनको पीछे क्यो खिंचे विरोध करने से विरोध बढ़ता है। दौड उपन्यास के माध्यमसे ममता कालीया ने यही बताया है पवन जैसे कई लड़के इस वैश्विकरण के माहोल में परिवार में एक साल नही रहना चाहते तो वह भारतीय संस्कृति को तोड़कर भौतिकवादी जीवन जीना चाहते है।

२. भारतीय परपंरा –

आज का युग संगणक का, तकनिकी का मोबाईल का युग माना जाता है। इस युग में मानव अपनी मनुष्यता खोकर जानवरो जैसा वर्तन करत रहा है। बच्चे माँ पिताजी का सहारा होते है लेकिन बच्चे पढ़ते अपना करिअर बनाते और माँ बाप को अकेला छोडकर नौकरी करने के लिए दुसरे शहर, देश चले जाते है। दौड उपन्यास में पवन का भाई सधन भी ऊँची उडान भरने के लिए दिल्ली चला जाता है और माँ पिताजी अकेले हो जाते है। लेखिका विद्या शिंदे कहती है–''अकेलेपन के साथ सबसे जानलेवा होते है उदासी और पराजय बोध।''[४] आधुनिक युवा बच्चो का यथार्थ वर्णन बडा मार्मीक है। जीवन संघर्ष बच्चों के लिए सहज है मगर माता पिता के लिए यह बोझ बना हुआ है। बच्चो को बडा करने का सपना बुनकर आयुभर संघर्ष करनेवाले माता पिता के दिलपर बच्चों की विदाई गहरा असर करती है। उनके बिना जींदगी काटना मुश्किल हो जाती है। फिर भी बच्चो के भविष्य के लिए दौड उपन्यास में राकेश रेखा को समझाते हुए कहते है–''ठिक ही किया छोटूने जितनी तरक्की यहाँ दस साल में करवा उतनी वह वहाँ दस महिने में कर लेगा। जीनियस तो हैं ही।''[५] अपने बच्चे अपने पास भी होना चाहिए और जीनियस भी होने चाहिए यह आज मुश्किल लगता है। बच्चे विदेश से माँ–पिताजी के लिए सुविधाजनक यंत्र ओवन, कुकर, फुड प्रोसेसर जैसी चीजे लाकर देते है। मगर बच्चों के आलावा उन्हे ऐसी चीजों में खुशी नही मिलती। इस उपन्यास में मध्यमवर्गीय परिवार को इस ढंग से सुनिचित किया गया है। जिसमें सभी भारतीय संस्कारभरे हुए दिखाई देते है फिर भी बच्चे माँ–पिताजी को अकेला छोड़कर अपने नौकरी के लिए अर्थ प्राप्ति के लिए चले जाते ही है। इसका यथार्थ चित्रण दौड उपन्यास में किया है।

३. शहरी परिवार की सभ्यता–

दौड उपन्यास में शहरी परिवारों का यथार्थ चित्रण किया है। शहरों मे पारिवारीक जीवन गति से भरा हुआ दिखाई देता है। उपन्यास का नायक पवन का दोस्त अभिषेक अहमदाबाद में अपने परिवार के साथ हर वक्त बाहर घुमने जाते है। बाहर ही डिनर लेते है। यह आधुनिक सभ्यता से भरा पूरा परिवार है पुराने परिवार की तरह खाना पकाना, पसीने से लथपथ होना, बच्चो की फर्माइशे पूरी करना गृहिणीधर्म को निभाना यह आदर्श निभानेवाला परिवार नही है यह सारी असभ्यता के लक्षण माने जाते है। शहरी परिवार के जीवन मे पति–पत्नि हो, बापबेटा हो, भाई–भाई हो, सास–बहु हो आदिओं के आपसी संबंध भी यांत्रिकीकरण के कारण असभ्य वर्तनवाले बन गए है। यहाँ आधुनिक काल में नारी उच्चशिक्षित होकर भी पति पर संदेह करती है। दुसरी स्त्री के साथ अपने पति को देखना पसंद नही करती। जब राजुल कहती है''यों कहो कि तुम्हे मॉडल की तलाश में मजा आ रहा है।''[६] तब अभिषेक कहता है ''यही समझलो यह मेरा काम है।

मुझे तनख्वाह मिलती है।''[७] तब राजुल कहती है ''मजे है तनख्वाह भी मिलती है, लडकी भी मिलती है।''[८] इस वार्तालाप से पता चलता है की शहरी परिवारो में भूमंडलीकरण के इस युग में अर्थ प्राप्ती के लिए नौकरी के कारण यह पारिवारिक मूल्य तुटते जा रहे हैं।

४. व्यावसायिकता –

समाज में ज्यादा महत्त्व धन को दिया जाता है। अर्थ और अर्थव्यवस्था आज वह धुरी बन गयी है। जिसके द्वारा समाज में व्यवहार संबंध रिश्ते आदि सभी निर्धारित होते है। अर्थ के पिछे इमान, प्यार, आत्मसम्मान और शरीर बिकता है, आर्थिक व्यवस्था के कारण समाज तीन वर्गो में बँट गया है। (१) उच्चवर्ग, (२) मध्यमवर्ग और (३) निम्नवर्ग

वर्तमान युग में औद्योगिक विकास भौतिक सुखसुविधा के प्रति आकर्षक पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव अर्थ की प्राप्ति को अति महत्त्वकांक्षा के कारण मनुष्य अपना स्वास्थ्य खो बैठता जा रहा है। दौड उपन्यास में मध्यमवर्ग परिवार में उपजी नव धानाढ्य वर्ग की नयी पीढ़ी के चरित्र के माध्यम से संवेदनशुन्यता और मुल्यहीनता किस तरह बढ़ रही है उसका वर्णन किया है। आधुनिक काल के युवको ने शिक्षा के क्षेत्र में उच्चतर पदवी ग्रहण की है और कामयाब जिंदगी के सपने देखने लगे है। अब यह युवक नौकरियाँ ढुँढ़ते नही है कंपनियाँ उनके पास आकर उन्हे पॅकेज देकर काम को कुशलता खरिदते है। अहमदाबादमें कंपनियों में काम करनेवाले सभी युवकों में दोस्ती हो गयी है। नाश्ता करना इनकी आदत बन गई है। इसलिए लेखिका ममता कालीया कहती है ''सच्ची बात तो यह है कि अपने घर और शहर से बाहर आदमी हर रोज एक नया सबक सिखता है।''[९] आज रोटी के जगह पिजा ने लि, चमडे के जुते लोग पहनते नही। उसकी जगह फोम के जुते आ गए है। व्यवसाय की स्पर्धा के कारण ग्राहकों को विज्ञापन के द्वारा आकार्षित किया जा रहा है। भूमंडलीकरण ग्राहको को भुलावे में डालने का प्रभाव व्यावसायिक करते जा रहे है। कंपनी के इस युगमें कर्मभूमी ने इस युगके युवकों को अभिमन्यू बना दिया था। जो इस भूमंडलीकरण, वैश्विकरण के माहोल के चक्रव्युव्ह में फँसते जा रहे है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि भूमंडलीकरण मनुष्य के भीतर और बाहरी जीवन के दोनो पक्षों को प्रभावित करता है। और आज भी कर रहा है। साहित्य भी इससे अछुता नही है। समकालीन हिंदी उपन्यास में भूमंडलीकरण का चित्रण किया हुआ दिखाई देता है। ममता कालीया के दौड उपन्यास में भूमंडलीकरण का यथार्थ चित्रण मिलता है। यह उपन्यास इक्कीसवी सदी के आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद के जीवनगत परिणामों का यथार्थ संकलन है। वर्तमान सदी में अन्यवाद के एक नया वाद आरंभ हो गया बाजारवाद और उपभोक्तावाद। जिन युवा प्रतिभावो ने खुब कामयाबी पाई पर मानवीय संबंधो के समीकरण उनसे कही ज्यादा खिच गये तो कही ढोले पड गये। दौड उपन्यास भूमंडलीकरणसे टुटते मानवीमूल्यों का यथार्थ चित्रण और प्रभावों, तनाओं की पहचान कराता है।

संदर्भ–

[1]ब्रहत हिंदी कोश, संपा. कालिका प्रसाद और अन्यः ज्ञान मंडळ प्रकाशनः पृ. 1503
[2]दौड, ममता कालीया वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 66
[3]वही पृ. 66
[4]दौड में भूमंडलीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रणः डॉ. विद्या शिंदे, ए.बी.एस. पब्लीकेशन वाराणसी, प्र.स. 2012 पृ. 42
[5]दौड ममता कालीया वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 73
[6]दौड ममता कालीया वाणी प्रकाशन, नई दिल्लीपृ. 35
[7]वही पृ. 35
[8]वही पृ. 35
[9]दौड, ममता कालीया वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 14